Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

अध्य़ापन और अध्य़ापनशास्त्र (शिक्षाशास्त्र)

श्रीमती मंदाकिनी हुकेरीकर,
M.Phill 2013-2015 February 7&8,
सावित्रीबाई फुले, पुणे विद्यापीठ, पुणे.

शिक्षकों को तैयार करणे वाली संस्थाओं कि समस्यायें बहोत है। I इसमें से -

१) छात्राध्यापकों के चयन कि समस्या

२) निष्क्रीय तथा प्रभावहीन वातावरण की समस्या

३) छात्र- शिक्षण के व्यवहार में दुराभ्यासों कि समस्या

४) अधिकारी- प्रशिक्षकों की समस्यायें

५) अभ्यास विद्यालयों की समस्या

६) वाद विवाद पाठों की समस्या

७) विलिय एवं अनुदान की समस्या

८) विशेषज्ञ अध्यापाकों की समस्या

९) अंशकालीन छात्राध्यापक की समस्या

१०) विषयों के संयोजन की समस्या

११) मुल्यांकन की समस्या- छात्र शिक्षण के मुल्यांकन

१२) प्रशिक्षण संस्थाओं की समस्याऐं

१३) सेवारत शिक्षा की समस्याऐं उपर के सभी समस्याओं का

१४) अध्यापाकों को सुविधा की समस्या

१५) अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ

१६) बी.एड. कार्यक्रमो की समस्याएँ

१७) अध्यापक शिक्षण की समस्याएँ

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - “ Pedagogy And Teaching Learning ”

शिक्षक-प्रशिक्षक समस्यायें

- शिक्षकों को तैयार करनेवली संस्थाओं की समस्यायें १ से ७
- प्रदर्शन कौशल्यों की समस्याऐं ८, ९
- छात्रशिक्षण की विशेष समस्याऐं १०
- प्रशिक्षण संस्थाओं की समस्याऐं ११ से १७

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र-

अ) शिक्षण की क्रियाओं एवं संसाधनो

१) शैक्षिक उपलब्धियों कें

२) मापन एवं मुल्यांकन के तरीकों

३) शैक्षिक व्यवस्थाओं में संयमन एवं नियंत्रण

४) शिक्षा के स्तरों

५) शिक्षा- विषय के साथ विकसित नवीन विधाओं की दृष्टी से शिक्षा में अनुसंधान क्षेत्रों का विवरण प्राय: दिया जाता हैI

अ) शिक्षण कि क्रियाओं एवं संसाधानो में

१) शिक्षण

२) अधिगम

३) अनुदेशात्मक संसाधानों की उपलब्धता एवं प्रयोग

उदा :-

१) शिक्षा के अनेक स्तरों पर शिक्षा की प्रभावित को कैसे पहचाना या परिभाषित किया जाए इष्टतम (अधिकतम) या न्यूनतम अधिगम अर्जित करणे वाली दशाएँ क्या है।I

२) शैक्षिक परीस्थितीयों में से सफल रिती से शैक्षिक संसाधानो का उपयोग कैसे हो।I

३) अधिगम कें क्षेत्र में – कौशल अधिगम, वाचिक अधिगम, सम्प्रत्यय अधिगम, नियम अधिगम एवं समस्या समाधान अधिगम कैसे घटीत होता है , इन्हे प्रभावी रूप में अर्जित कैसे कराया जा सकता है I आदी-

ब) शैक्षिक मुल्यांकन एवं परीक्षाएँ तथा शैक्षिक मापन शैक्षिक शोध के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शोध कराने हेतू मुख्य रूप सें, जिम्मेदारी सोंपी हैI

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

भारतीय संदर्भ में शैक्षिक मुल्यांकन/मापन

केंद्रीय स्तर	**राज्य स्तर**	**जिला स्तर**
1) U.G.C.	1)S.C.E.R.T.	1) UNIVERSITY
2) N.C.E.R.T	2) UNIVERSITY	2) EDUCATION COLLEGES
3)N.C.T.E.		3) D.I.E.T.

इस अनुक्षेत्र में शोध योग्य मुख्य विवादात्मक मुद्दे है-

१) **मानक संदर्भित** – Norm referenced

२) **निकष संदर्भित – उपगमों**

३) **मापन एवं मुल्यात्यांकन की विधियों का विकास**

४) **परिष्करण एवं मानकीकरण** –

५) **बाहय परीक्षाओं की वैधता**

६) **आतंरिक परीक्षाओं की वैधता** –

७) **विश्वसनीयता एवं विशुद्धता-**

जिन पर अनुसंधान हुऐ है किन्तु उन्हे संतोषजनक उत्तर नही माना जा सकता।

क) शैक्षिक अनुसंधान का तिसरा महत्वपूर्ण अनुक्षेत्र शैक्षिक प्रशासन, संगठन, पर्यवेक्षण, नियोजन से संबध है।I

उदा :-

१) शैक्षिक प्रशासन के सफल तरीके या प्रभावी शैलीयाँ क्या है। I

२) औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्थाओं में निहित लोकाचार (इथाँस) किस प्रकार के भिन्नता रखता है।

३) शैक्षिक पर्यवेक्षण के प्रभावी तौर तरीकें कैसे विकसित किये जाएँ।

४) शैक्षिक नियोजन का उपयुक्त स्वरूप, तंत्र, एवं उसका आग्रह क्या है।

इन अनुक्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण प्रश्न है जिनकें उत्तर जानने की आवश्यकता है। आदी मुद्दे क्षेत्रके शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिये नितांत चुनौतीपूर्ण है। I

ड) शिक्षा के स्तरों के शैक्षिक शोध – प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, अध्यापक एवं प्रविधिक शिक्षा आदी के अनुसार अनुसंधान हेतू पूर्व वर्षित क्षेत्रों से संबधित समस्याओं एवं मुद्दों का अपेक्षित विचार अभीतक नही

किया जा सका है।I

उदा.:-

१) शिक्षा के स्तरों एवं अध्यापक शिक्षा की संस्थाओं में शिक्षण

२) अधिगम परीक्षण

३) शैक्षिक प्रशासन

४) पाठ्यक्रम

५) संगठन

६) प्रबंध एवं नियोजन के प्रभावी ढंग

७) शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में क्या है शिक्षा इन पर जानकारी संतोषजनक रूप से विकसित नही हो सकी है Iइनसे संबधित कतिपय मुद्दों का अल्पकालिक एवं दीर्घकालीन हाल प्राप्त करना शैक्षिक शोंधो का मुख्य आग्रह होना चाहिए।I

ई) शिक्षा के अंतर्गत अभी हाल ही मे विकसित नई विधाओ यथा : –

शिक्षा दर्शन, शैक्षिक समाजशास्त्र, शैक्षिक विज्ञान, शैक्षिक राजविज्ञान, शैक्षिक अर्थशास्त्र, शिक्षा मनोविज्ञा, अभिक्रमित अधिगम, शिक्षण व्यवहार तथा शैक्षिक तकनॅालाजी आदी के रूप में भी शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्रों को विभाजित किया जाता है। I

शैक्षिक अनुसंधान हेतू ये क्षेत्र अत्यंत परिवर्तनशील एवं गतिशील है तथा इनमें शोध कराने के लिए नई विधियों एवं प्रणाली तंत्रो को खोज निकालने की महती आवश्यकता है।I

फ) अन्तर्विद्यापरक शोध (Interdisciplinary Research):- ये एक नया क्षेत्र विगत दशकों में विकसित हुआ है। I इसके तहत शिक्षा की औपचारिक एवं अनौपचारिक व्यवस्थाओं से जुडी समस्याओं का शिक्षा के अतिरिक्त अन्य विधाओं की सहायता से अध्ययन करने की पहल की जाती है। I

उदा.-

१) शैक्षिक प्रशासन एवं नियोजन की उपयुक्त विधीयों के विकास.

२) शिक्षण एवं अधिगम की व्यवस्थाओं में प्रबन्ध सम्बन्धी समस्याओं, पाठ्यक्रम निर्माण तथा शिक्षण विधायों, मुल्यांकन एवं मापन की धारपाओं तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के माध्यम से उत्पन्न अनेकानेक शैक्षिक दुर्नितियों, समस्यायो एवं अपसमंजनकारी परिस्थितीयों की सम्यक अध्ययन अन्तर्विद्यापरक शोध के महत्त्व पूर्ण मुद्दे बनाए जा सकते है। I

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्रे

अ ब क ड ई फ

संसाधनों मुल्यांकन/मापन शैक्षिक प्रशासन शिक्षा स्तर विधाओ

❖ **गुणात्मक शैक्षिक शोध की आवश्यकता क्यों - Need, Purpose**

१) शिक्षा के उद्देश्यों, उसके साधक तत्वो एवं परिणामो की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार के लिए शैक्षिक अनुसंधान की मदद की जाए। I

२) यह शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षा की नीती निर्धारकों अभिवादकों तथा शिक्षा में रुची रखनेवाले अन्य लोंगो के लिए आवश्यक मना जा सकता है। I

३) विविध शैक्षिक मुद्दों पर वस्तूनिष्ठ ज्ञान विकसित करने की प्रक्रिया को सुनिश्चित बनानें में शैक्षिक अनुसंधान महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। I

४) शैक्षिक परीस्थितीयों एवं प्रक्रियाओं की कार्य-विधी के बारे में अवबोध को बढाने की दृष्टी से भी शैक्षिक अनुसंधान की आवश्यकता अनुभूत की जाती है। I

५) शिक्षा सम्बन्धी नीतीगम निष्कयों एवं उनके कार्यान्वयन की प्रभावी विधियों का पता लागणे की प्रक्रिया को सरल एवं त्रुटीहीन बनाने में भी शैक्षिक अनुसंधान अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित होता है।I

६) शैक्षिक अभ्यासों तथा उनमे पाई जाने वाली अधकचरी व्यवस्थाओं, उनके स्वरुपों तथा शैलीयों में परिष्करण एवं अपेक्षित सुधारलाने की लिए भी शैक्षिक अनुसंधान का उपयोग किया जा सकता है।I

७) शैक्षिक कार्यक्रमों तथा नीतियों का समय-समय पार वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष रूप में प्रभाव मुल्यांकन करने के लिए भी शैक्षिक अनुसंधान का औचित्य प्रदर्शित किया जा सकता है। I इससे नीति निर्धारकों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा शैक्षिक प्रशासकों को उचित दिशा निर्देश एवं प्रतिपुष्टी (Feed back) प्राप्त होती है।I

८) शैक्षिक अनुसंधान का अवलम्ब शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाओं एवं प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने के अतिरिक्त उनसे संबधित जानकारी धारणाओं तथा समस्याओं की समाधान विधायों में उत्कृष्टता का समावेश करता है I इससे शैक्षिक ज्ञान कोष मे अभिवृद्धी के साथ शैक्षिक

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

अभ्यासों की गुणवत्ता, कार्यपद्धती एवं शैक्षिक परिस्थितीयों की अर्थपूर्णता के प्रति संवेदनशीलता में विकास होता हैII

शैक्षिक अनुसंधान के प्रकार-

Nature/Purpose/Need & scope through types of research

1)Fundamental | 2) Applied | 3) Action Research

जॉर्ज जे. मुळे के अनुसंधान विधियों को तीन मौलिक रुपों में विभाजित किया है।

अनुसंधान विधियाँ (Types of Edu. Research)

सर्वेक्षण विधि Survey Method	ऐतिहासिक विधि Historical Method	प्रयोगात्मक विधि Experimental Method
१) विवरणात्मक	१) ऐतिहासिक	१) साधारण प्रायोगिक
२) विश्लेषणात्मक	२) संवैधानिक	२) बहुचरीय विश्लेषण
३) विद्यालय	३) प्रलेखी	३) वैयक्तीत अध्ययन
४) सामाजिक		४) भविष्य संबंधीकथन

Major Approches to Research (दृष्टीकोनात्मक/उपयोगात्मक प्रकार उपर के १ ते ३ और -

४) कार्योत्तर विधि (अनुसंधान)- Ext. post facto Research

५) प्रयोगशाळा प्रयोगपद्धत्ती - (Laboratory Experiment)

६) क्षेत्र प्रयोग - Field study

७) क्षेत्र अभ्यास - Field Study

७) गुणात्मक अनुसंधान - Qualitative Research

1) Phenomenological Research

2) Ethno methodical S. Naturalistic Enduing

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

गुणात्मक अनुसंधान - Qualitative Research

Symbolic Inter actionnism – Trend

Phenomenological Research
प्रघटना अनुसंधान

i)Philosophical Foundations of education
(**शिक्षा के दार्शनिक आधार** ideal possibilities)

Hermeneutics
अर्थविवरणशास्त्र

i) Text
ii)Speech
iii) Ancient Text
iv) Aesthetics
v) Linguistics
(भाषा अभ्यास)

Ethno methodical Research
मानवप्राण वर्णनात्मक अनुसंधान

i) Ethnographer
i) Field work technique
ii) Ideagram
iii) Social & Cultural Frame Work
iv) Holistic **(सार्वभौम)**

❖ **गुणात्मक अनुसंधान के दार्शनिक-:**

i) **एडमंड हुर्सेल १९३८- १८५९ -**
ii) **हायडेगर**
iii) **मेर्लो पॉंती**
iv) **प्याँ पाँल सार्त्र**
v) **निकालस टीमाशेप**

❖ **गुणात्मक अनुसंधान के उपकरण Teshnique Tool**

i) **साक्षात्कार - Interviewer**
ii) **प्रश्नावली - Questionnaire**
iii) **मतावली - Opinion**
iv) **निरीक्षण - Observation**
v) **समाजमिती - Sociometry**
vi) **मानसमिती - Psychometric**

गुणात्मक अनुसंधान पद्धती -Research Method

i) **सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धती - Survey Method**

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

विवरणात्मक अनुसंधान - एवं व्यक्ती अध्ययन -Descriptive survey

विवरणात्मक Descriptive	विश्लेषणात्मक	विद्यालय
१) सर्वेक्षण परीक्षण (survey testing) i) उपलब्धी परीक्षण Achivement testing ii) बुद्धी परीक्षण Intelligence testing iii) व्यक्तित्व परीक्षण The personality Testing iv) मुल्यांकन सर्वेक्षण अध्ययन Survey Appraisal Studies २) प्रश्नावली सर्वेक्षण	१) प्रलेखी सर्वेक्षण २) प्रेक्षण सर्वेक्षण ३) मापनी सर्वेक्षण ४) आलोचनात्मक (सूक्ष्मात्मक घटना) ५) कारक विश्लेषक	१) व्यवहार अध्ययन (Behaviour Studies) २) अभिवृत्ती अध्ययन Attitude Studies ३) पाठ्यक्रम अध्ययन Curriculum Studies ४) भवन सर्वेक्षण Building surveys ५) स्तर अध्ययन Status Study ६) वित्तीय अध्ययन financialstic study

❖ गुणात्मक अनुसंधान के लक्ष्य Thinking Units घटक (Focuses)

जॉन लोफलंड १९८४ मे के बारे Focuses on Thinking Units ग्रन्थ मे gniteeS laicoS gnizylanA' मे लिहा है

१) अर्थ - Meaning - Social Symbolic

२) कृती - Practices - Behavior - Play, drama, dance

३) घटना - Episodes - Marriage, birth, Criminal

४) संपर्क - Encounters - Interaction- Friends, Chatting, Pregame

५) भूमिका - Roles - Professional , Cast Cttegii

६) परस्परसंबंध -Relationships - Teacher- Students, Doctor- Patient

७) गट - Groups - players Team, Clubs,

८) संघटन - Organizations - School, Colleges, Political Party

९) वसाहत - Settlements - World, Country, Religion, Village, City, Ward

गुणात्मक अनुसंधान के लिए न्यादर्श -

१) सुज्ञ न्यादर्श -Judgement sampling - example seakquel students - life history method same

२) हेतू न्यादर्श - purposive sampling - case study same - example- Social leaders, Institution

३) हिममंडळन्यादर्श snowball sampling - Example- Responsors- key informants

गुणात्मक अनुसंधान ,Limitations

१) दर्शनवादी- दर्शनशास्त्र के - (Positivism)

२) १९६० के बाद प्रघटना कल्पना का प्रसार

❖ गुणात्मक अनुसंधान के - Important महत्त्व

1) Perfect Information – परिपूर्ण माहिती

2) Human Factor Qualitive Research Through Know

3) Human Cultures, Emotional Factors Known

4) Special, Features Studies About People

5) Statistics Is 100% Accurate And 0% Truth

❖ गुणात्मक अनुसंधान के लिये सर्वेक्षण के लिये प्रमुख-चरण-प्रक्रीयांये-Process For Report Research-

अ) सर्वेक्षण का आयोजन - (Planning Of Survey)-Process- सर्वेक्षण संचालन के लिए संघठन, अनुभव, प्रशिक्षण , तथा उपकरणों की आवश्यकता होती है। सर्वेक्षण के आयोजन के लिए निम्न बानें आवश्यक होती है।

१) समस्या का चुनाव

२) उद्देश्य का निर्धारण

३) अध्ययन के क्षेत्र का परिसीमन

४) प्रारंभिक अध्ययन

५) निदर्शन का चयन

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

६) बजट का निर्माण

७) समयसूची का निर्माण

८) अध्ययन प्रणाली का चुनाव

९) अध्ययनके उपकरणों का निर्माण

१०) कार्यकर्त्ताओं का चुनाव तथा प्रशिक्षण

११) सर्वेक्षण का संघठन

१२) पूर्व परीक्षण तथा पुर्वगामी परीक्षण

ब) संमकों का संकलन - (Collection Of Data)

१) प्राथमिक संमकों - सूचनादाताओं - प्रश्नावली, साक्षात्कार, निरीक्षण

२) द्वैतीयक संमकों - प्रकाशित रिकार्डो - सरकारी, व्यक्तिगत, डायरी

क) संमकों का प्रक्रियाकरण - processingProcessing Of Data

१) संमक मापन

२) संमक संपादन

३) संमक संकेतीकरण

४) संमक वर्गीकरण

५) संमक सारणीकरण

ड) संमक विश्लेषण तथा निर्वचन - (Analysis And Interpretation Of Data) –

१) द्वेतीयक संमको का अनुवीक्षण तथा उपयोग

२) सांख्यिकीय वर्णन

३) सम्बन्धों की व्याख्या

4) कार्य-करण सम्बन्ध ज्ञान करना

५) समस्या तथा प्रकल्पनाओं का सत्यपन

६) सामान्यीकरण तथा निष्कर्षीकरण

इ) समंक प्रस्तुतीकरण - presentation of data – आरेखीय निरुपण -

समंक का लेख चित्रीय निरुपण -

संदर्भ सूची का निर्माण करना -

फ) प्रतिवेदन का निर्माण - (Preparation Of Report) -

रिपोर्ट का निर्माण व प्रकाशन यद्यपि सर्वेक्षण कार्य पुरा हो जाने के बाद ही हो सकता है।

- गुणात्मक अनुसंधान के रूप में प्रघटना अनुसंधान का विवेचन -

Explain Phenomenological Research As Qualitative research –

उद्देश्य और प्रकृति - सन १९१३ में प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक एडमंड हर्सल पुस्तक Ideas :- introduction to pure phenomenology में पहली बर Phenomenology शब्द का प्रयोग किया।

हर्सल के अनुसार प्रघटना एक दार्शनिक और वैज्ञानिक प्रणाली है। प्रचलित वेज्ञानिक पद्धती समंको से प्रारंभ करके अज्ञान वस्तुओंके विषय में सामान्यीकरण करती है। प्रघटना पद्धति प्रकृती में व्यापक संरचनाओं और सम्बन्धो को समझने के लिए निरीक्षण विवरण और वर्गीकरण कि तकनीकियों का प्रयोग करती है। क्योंकी यहाँ पर प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग नही किया जा सकता है। हर्सल ने प्रघटना मनोविज्ञान और प्रघटना दर्शन में भी अन्तर किया। हर्सल के अनुसार प्रघटना मनोविज्ञान वैध है परन्तु गौण है। प्रघटना दर्शन सभी विज्ञानों का आधार है। प्रघटना दृष्टीकोन एक एैसे विज्ञान पर पहूँचना चाहता है। जो पुरी तरह सें पूर्वाग्रह मुक्त हो। इसमें वैज्ञानिक सभी प्रकार के के प्रचलित सिद्धान्तों और पूर्व मान्यताओं को छोडकर सभी प्रकार के पूर्वग्रहों से मुक्त होणे का प्रयास करता है। जैसा कि युनांनी दार्शनिक प्लेटो ने दिखलाया था, पूर्व मान्यताओं के बिना केवळ दर्शन संभव है विज्ञान नही। फिर भी अति प्राचीन काल से दार्शनिकॉ ने पूर्व मान्यताओं से रहित निरपेक्ष विज्ञान का विकास करने का प्रयास किया है। हर्सल का प्रयास भी इसी दिशा में एक कदम था।

निकालस रिमाशेफ के अनुसार हर्सल कि प्रघटना Phenomenology भाववाद अथवा प्रकृतीवाद, अनुभववाद, की समालोचना है जो यह मान लेती है की अपनी पाँच इंद्रीयों के द्वारा वैज्ञानिक जगत की जाँच कर सकते है। और ज्ञान के एक ऐसे निकाय की रचना कर सकते है। जो ज्ञान की वस्तुगत यथार्थता कों प्रतीविहीत करे।

हर्सल के अनुसार जडतत्व और चेतना पर शासन करने वाला नियम स्वयं जगन का अंग है। अस्त दार्शनिक को सबसे पहलें अपने सुंदर अनुभवों और अनुभव की वस्तु में अन्तर करना सीखना चाहीए।

प्रघटना अनुसंधान गुणवत्ता अनुसंधान के मुल दृष्टीकोन - प्रघटना अनुसंधान में केंद्र में मानव प्राणी होते है। इनके अनुसार मानव एक व्याख्या करने वाला प्राणी है। पशुओं के समान उसके सभी तरह के सांवेदनिक और गामक अंग मिले हुए है। सभी मानव जानना चाहते है। परन्तु मानव व्यवहार की व्याख्या

पशु व्यवहार के समान उत्तेजना अनुक्रिया के रूप में नही की जा सकती। मानव केवळ जानना नही चाहता बल्कि, अर्थी, मुल्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों की व्याख्या भी चाहता है। भौतिक जगत में रहते हुए भी वह उसके संकेतों (Symbols) की ओर अधिक ध्यान देता है । वह वस्तुजगत नही बल्कि सूक्ष्म जगत की खोज करता है। वह स्वयं अपने कॉ अपने साथीयों को और अपने और साथीयों के सम्बन्धों को जानना चाहता है। वह अपने भौतिक, सामाजिक, और औपचारिक परिवेश की व्याख्या करना चाहता है। इस कार्य में ज्ञान का समाजशास्त्र Sociology Of knowledge उसकी सहायता करता है। प्रघटना समाजशास्त्र (Phenomenological Sociology) इसी खोज का परिणाम है। इसकी विशेष पहचान इसका विधिशास्त्र (Methodology) है। इसको एडमंड हर्सल की फिनोमेनोलोजी से निकाला गया है। इसमें सामाजिक यथार्थता के आत्मगत गुण की ओर संकेत कहते हुए बर्जर और लकmmmमैन लिखते है - नित्यप्रति का जीवन मनुष्यों द्वारा व्याख्या किया हुआ और एक समीचीन रूप में उनके लिए आत्मगत पूर्णता लिए हुए है।

❖ अध्यापक कौशल्य - (सामान्य व्यव. कौशल्य - अध्यापक)

शैक्षिक पर्यवेक्षण के लक्ष्य - objectives of eduvarional supervisiont) शिक्षण विधियों एवं कौशलों का विकास To develop the methods and skills of teaching इस लक्ष्य के अंतर्गत शिक्षण सबंधी नवीन विधियों प्रतिधियों एवं कौशलों के कक्षा शिक्षण में प्रयोग करणे पार बळ दिया जाता। जैसे- प्रदर्शन करना, व्याख्या करना, प्रश्न करना, अभिक्रियाओं का कक्षा में क्रमबद्ध एवं उत्तम रूप से शिक्षा व्दारा कैसे दिया जायें इन पर बळ दिया जाता।

शिक्षण के प्रतिमान MODELS OF TEACHING आज कल शिक्षण सिद्धान्तो का विकास प्रतिमानों (Models) के रूप में हुआ है। ये प्रतिमान शिक्षण सिद्धान्तों के प्रतिपादन के आधार का कार्य करते।

❖ परिभाषायें :-

१) एच. सी. विल्ड :- " किसी रूपरेखा अथवा उद्देश्य के अनुसार व्यवहार को ढालने की प्रक्रिया प्रतिमान कहलाती है।

२) क्रॉन बैक तथा गैगने :- शिक्षण प्रतिमानों में छः क्रियायें निहित है।

i) सीखणे की निष्पत्ति कॉ व्यावहारिक रूप।

ii) ऐसे उद्दीपन का चान करना की विद्द्यार्थी अपेक्षित अनुक्रिया कार सके।

iii) ऐसी परिस्थितीयों का विशेषीकरण करना जिनमें विद्यार्थीयों की अनुक्रियाओं कॉ देखा जा सके।

iv) ऐसे मानदंड व्यवहार का निर्धारण करना जिससे विद्द्यार्थीयों की निष्पत्ती कॉ देखा जा सके।

v) कथागत परिस्थितीयों मे अन्तःप्रक्रिया (Interaction) का विश्लेषण करके बांधीत शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विशेष युक्तियों का विशिष्टीकारण करना।

vi) यदि विद्द्यार्थियो में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन न हो तो नितियों (Strategies) तथा युक्तियों (Tactics) में सुधार करना।

"Teaching models are just instructional designs. They describe the process of specififying and producing particule enviormental situations cause the students to interact in such a way that the specific change ocurs in his behaviour." - Joyces Well," (Instructional Design) है। वे विशिष्टीकरण और विशेष प्रकार के वातावरण की परिस्थितीओं के निर्माण की प्रक्रिया है। जो विद्द्यार्थीयों में अन्तःक्रिया करवाती है। जिससे उनके व्यवहार में विशेष परिवर्तन कार सके।

३) हिमन :- " शिक्षण प्रतिमान शिक्षण के सम्बन्ध सें सोचने विचारनें की एक रिती है। (Model is a way to thinking)

❖ शिक्षण प्रतिमान के मौलिक तत्व

१) उद्देश्य :- प्रतिमान के विभिन्न पक्ष (Phases) होते है। अंतः प्रतिमान व्दारा उद्देश्य का लक्ष्य बिंदू विशेष प्रकार की क्षमता ओं कों विकसित किया जाता है।

२) संरचना :- (Syntax) - संरचना के अन्तर्गत शिक्षण की क्रिया ओं युक्तियाँ (Tactics) तथा विद्द्यार्थी एवं शिक्षक की अन्तःप्रक्रिया (Interaction) के प्रारूप को इस प्रकार से क्रमबद्ध रूप में निर्धारित किया जाता है। के वांछित परिस्थितीयाँ उत्पन्न होकर शिक्षण का उद्देश्य सरलतापूर्वक प्राप्त हो जाय।

३) सामाजिक प्रणाली - Social System- के अंतर्गत विद्द्यार्थी और शिक्षक की क्रियाओं तथा उनके आपसी सम्बन्धो पर विचार किया जाता है। साथ हि यह निर्णय किया जाता है की विद्द्यार्थीयोंकॉ किन-किन नीतीयों तथा प्रविधीयों व्दारा प्रेरणा डी जाय।

Impact Factor : 1.021 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – III, Issue - V February 2015
Theme - " Pedagogy And Teaching Learning "

४) मुल्यांकन प्रणाली - Support system - में मौखिक अथवा लिखित परीक्षाओं व्दारा याह निर्णय लिया जाता है कि शिक्षण का उद्देश्य प्राप्त हुआ अथवा नही। इस सफलता अथवा असफलता के आधार पर उन नीतीयों, प्रविधियों तथा युक्तियों की प्रभावशीलता के विषय में स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जिनका शिक्षक के समय प्रयोग किया जाय। यदि शिक्षण असफल रहा तो नीतीयों तथा युक्तियों में परिवर्तन क्या जाना चाहिये।

❖ **शिक्षण प्रतिमानों के प्रकार – Types of models of teaching**

१) **दार्शनिक शिक्षण प्रतिमान** – (Philosophical Teaching models)

२) **मनो वैज्ञानिक शिक्षण प्रतिमान** - (Psychological Teaching models)

३) **आधुनिक शिक्षण प्रतिमान** - (Modern Teaching models)

शिक्षण प्रतिमान के प्रकार

दार्शनिक शिक्षण प्रतिमान - (Philosophical Teaching models) इजराइल सैफलर - जनक i) प्रभाव प्रतिमान (The impression Models of reaching) ii) सुझ-बुझ प्रतिमान(INsight model) Pleto (प्लेटो) - जनक iii) नियम प्रतिमान (The rule model	१) मनो वैज्ञानिक शिक्षण प्रतिमान - (Psychological Teaching models) जॉन पी. डिकेको (जनक) १) बुनियादी शिक्षण प्रतिमान (Basic Teaching models) जनक राबर्ट, लेसर - १९६२ २) काम्प्युटर आधारित शिक्षण प्रतिमान (Computer based teahing model) जनक लारेन्स , डेनियल डेविस १९६५ ३) विद्यालय अधिग्म का शिक्षण प्रतिमान (teaching models for oschool learning) जनक- जॉन कसैल ४) अन्तःप्रक्रिया शिक्षण प्रतिमान (Interaction Model of Teaching)	आधुनिक शिक्षण प्रतिमान - (Modern Teaching models) जनक - ब्रूस आरजायस १) सामाजिक अन्तः प्रक्रिया स्त्रोत प्रतिमान (models based onsocial interaction) और ४ प्रतिमान i) सामुहिक अन्वेषण प्रतिमान ii) जुरीस पुटेंसल प्रतिमान iii) पृच्छा प्रतिमान iv) प्रयोगशाळा विधी प्रतिमान २) सूचना प्रक्रिया स्त्रोत प्रतिमान i) निष्पती प्रत्यय प्रतिमान ii) आगमन प्रतिमान iii) पृच्छा प्रशिक्षण iv) जैविक विज्ञान पृच्छा प्रतिमान v) अग्रत संघटनात्मक vi) विकासात्मक प्रतिमान ३) व्यक्तिगत स्त्रोत प्रतिमान i) दिशाविहीन शिक्षण प्रतिमान ii) कक्षा समा प्रतिमान iii) सृजनात्मक शिक्षण iv) जागरूकता प्रतिमान v) प्रत्यय व्यवस्था प्रतिमान ४) व्यवहार परिवर्तन स्त्रोत प्रतिमान